MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. **P_MSS_4437**

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

॥ ६० ॥ आदरिजीवक्षमागुण आदरि मकरिराग नइ द्वेषजी । समताइंसिववुखपामीजइ क्रोधइ
कुगतिविशेषजी ॥ १ ॥ आं० समता संजमसार सुणीजइ कल्पसूत्रनीसाषिजी क्रोधपूरवको
डिवारितबालइ सगवं नइ रणपवित्ताषिजी ॥ २ ॥ आं० कुणकुणजीवतस्याउपसमथी मांसलितुंदृष्टां
तजी कुणकुणजीवरमाम्यासवमाहे क्रोधवसणइवि रतंतजी ॥ ३ ॥ आं० सोमिलसुसरगसीमसुजास्य
बांधीमाटीपालिजी गयसुकमालखमामनि धपतउ सुगतिगयउतत्कालजी ॥ ४ ॥ आं० कूल
मवालुउसाधुकहातउ कीधउ क्रोधअपा रजी कोणिकनी गणिकावसिपडियउ न
रगनियउसंसारजी ॥ ५ ॥ आं० सुवनकारका रीअतिवेदनवाधसुंबीधुंसीमजी मेतारिजा
रिषितुगतिपुहुतउ उपसमपुद्रजमीमजी ॥ ६ ॥ आं० कुरडुंकुरडमबेसाधु कहातारह्याकुणाल
लापालिजी क्रोधकरीकुगति तेपहुता जनमगमाम्यउ आलिजी ॥ ७ ॥ आं० करमखपावीसुग
तिपहुता खंदगसूरिनासीसजी पालकपापीघाणीपील्या नाणीमनमांहिरीसजी ॥ ८ ॥ आं० अवं
कारीभासिसुकुंवली रोसचउलियसुनेहजी । वरसकलिसहाउसवउजालाक्रोधतणाफलएहजी ॥ ९ ॥ आं०

1

वाघणि सद्दुमिरी विलूरंउं तव छिण्या वो संसाराणजी। मासखमकोमन शुमित्त सावपामंउ। पद्मसमाय एता
णिजी। २० सावमि नरगगयउ मेउबाद तन कादी वाट्या तिछ। विजी। कोधतणा फल कडुयाजाणी राग
देषढ्य स्मां थिजी। २१ खंदगारिषिनी घाल उतारी मच्छर परीसउ जेणजी। गतिवा सम्बाइ खंधी अइउ सव
लक्षमाय णतेणजी। २२ श्रां० कोधकरी खंदगा। आचारिज तनमच्छ गमि कमारजी। [illegible] किर्पन
उदेस बजाल्पउ समि[illegible]सबद मजा खिजी। २३ श्रां० चंमकच्छ आचारिज वलता मन्न खि
दीया उक्कारजी। कमाकरतां केवल पाम्युं तन वदी क्षितवचणगारजी। २४ श्रां० पांच वारी
षिनइं संतापउ आणी मनमा द्विषजी। पांचा नवमी सदरा उमंदना विक। कोधतणा फल देषि
जी। २५ श्रां० सागरचंद्रइ सीस उजाल्युं निमिभल सनन दिंढजी। समता साव धरी उरलोक इ पहुतोप
रमानंदजी। २६ श्रां० जणवंम लकदीउ शबिडं माहि निरति नदीक ढइरादवजी। रिषि वंसलकदीउइव
दतउ यालिवे दिनी देवजी। २७ श्रां० वंदना उक्षणी पुण्य [illegible] जी। [illegible] ॥ २
रिषणी। [illegible]

पनउफल महावीर कोध [illegible] जी। २८ श्रां० भरतनं मारणा मुंठ कयाडी बाहुबल बलवंत
जी। उपसमरस मन माहं आणी संजम ल्यउ मतिमंतजी। २९ श्रां० [illegible] काउसग माहिं चद उं जति कोपइं ॥
ड प्रसनचंद रिषिरायजी। सातमि नरग तणा दल मेल्या। कडुयातणा कषायजी। ३१ श्रां० आहार
माहि कोध इरिवि इंकउ आणि उवसम तसावा जी। कूरगडु यइ केवल पाम्यउ। क्षमातणाइ प
रमाविजी। ३२ श्रां० पार्श्वनाथन इ उपसर्ग कीधा कमठ बसंत रिषी भजी। नरग त्रिजं
व तणा उरवला धम कोधतणा फल दीठ जी। ३३ श्रां० क्षमावंत दवदंत रिषी म
र थन मां विरच्छ उक्काउ सगाजी। कोरवक ट किद एव उइटाले ओम्या कर्मनाग हीजी।
३४ श्रां० सज्यापालक कानेन स्यउ नाम। उको धउदीरजी। कान खिडं खीला तो काणा
नविकूउ महावीरजी। ३५ श्रां० चारित्र पानउ काडं कजंतउ दढप्रहारि अतिशकजी। क्षमाक
री मारूइ सेपक तउ उपसर्ग सह्या अनेकजी। ३६ श्रां० कुरुरमा क्रिउपज तउ क्षास्यउ कोधइ के
वलमाणजी। वेषउ श्रीदम सारउभी मर [illegible] णपूर्व कह्याणजी। ३७ श्रां० कंच कंमना का उग्गसगिरवि 2

यउ। क्षमा तणउ ते मारुजी। दासी तणा नवि निसिदी वउ। सुरपदवी लहि सारजी। २८। आं०। मीझ्ड़ फाव
सी रिषि कीधउ। सलसलउ कूपरि कोपजी। विरया वचन गयउ तेणा लइ। कीधउ संजम लोपजी। २९। आं०। इ
म अनेक तर्या त्रिभुवनमइ। क्षमा गुणेन विजीवजी। क्रोध करी कुगति पणि पहुंता। पामंता सुरि विरीव
जी। ३०। आं०। विमद्या लाल कलक हियइ विहउ। तमारइ इकवारजी। पणि कषाय अनंती वेल्या अ
पइ मरणा अपारजी। ३१। आं०। क्रोध करंता तन पजा पकी धउ। नय मइ कोई गमजी। आंपतप
इ परनइ संतापइ। क्रोध ढंकि दउ कामजी। ३२। आं०। क्षमा करंता परवन लागइ
लागइ कोमि किलिसजी। अरिहंत नइ वखा। राधकथा पइ। व्याप इसुज सवाद समजी। ३३।
४२४ आं०। नगर मा हि नागोर नगीनउ। जिहां जिणवर प्रासादजी। श्रावक लोक वसइ अतिसुखिया धर
म तणा इ परसादजी। ३४। आं०। क्षमा छत्रीसी खांतिं कीधी। आतम पर उपगारजी। श्रावक पणि सांभल
तां समझ्या। उपसम धरयउ अपारजी। ३५। आं०। जुगप्रधान जिणचंद सूरीसर। सकलचंद तसु सीस
जी। समयसुंदर तसु सीस भणइ इम। चउविध संघ जगीसजी। ३६। इति क्षमाछत्रीसी समाप्ता। ७ २